मनुष्यता के क्षरण की कहानी

ईंधन

स्वयं प्रकाश

ललित श्रीमाली

मनुष्यता के क्षरण की कहानी: ईंधन
(स्वयं प्रकाश)

वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में भूमंडलीकरण, आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद की चर्चा ही व्याप्त है। इक्कीसवीं सदी का हिंदी उपन्यास साहित्य भी इससे अछूता नहीं हैं। भूमंडलीकरण के कारण हमारे आस-पास की दुनिया में बदलाव आ रहे हैं। इन बदलावों ने हिंदी उपन्यास को नई दिशा और गति दी हैं। भूमंडलीकरण से हमारे समाज पर खासकर, मध्यवर्ग पर पड़ने वाले प्रभावों की सूक्ष्मता से पड़ताल की कोशिश करता है- स्वयं प्रकाश का उपन्यास 'ईंधन'। 'ईंधन' का मूल कथ्य उदारीकरण, भूमंडलीकरण, नव साम्राज्यवादी उपभोक्तावाद व गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दुष्प्रभाव हैं। उपन्यास में रोहित और स्निग्धा को उनके दाम्पत्य जीवन की विफलता के लिए दोषी नहीं माना जा सकता। उनकी विफलता का कारण नवसाम्राज्यवाद है। इस नवसाम्राज्यवाद को ही आजकल वैश्वीकरण कहा जाने लगा हैं। स्निग्धा और रोहित की शादी चाहे जितनी जल्दबाजी में हुई हो, वह सफल हो सकती थी, यदि रोहित पर जल्दी से जल्दी सफल व्यक्ति बन जाने का दबाव नहीं होता या यदि वह इस दौड़ में शामिल होने से इन्कार करने का साहस जुटा पाता। मध्यवर्ग के युवकों की स्थिति ऐसी ही हो रही है। व्यवस्था की बर्बरता और शक्ति हमारे तमाम अनुमानों और कल्पना से भी अधिक है। उपभोक्तावाद की मृगतृष्णा की शिकार पहले 'ईंधन' की नायिका 'स्निग्धा' होती है और फिर नायक 'रोहित'। पूरा उपन्यास ही जिन्दगी के साधनों को जुटाने की भागमभाग में मुट्ठी से रेत की तरह जिन्दगी के ही फिसल जाने की कहानी है। मूलतः 'ईंधन' नवसाम्राज्यवाद के भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के चक्रव्यूह में फँसे भारत के आम आदमी के ईंधन बन जाने के जटिल यथार्थ की कहानी है।

ग्लाॅबलाइजेशन या उदारीकरण के कारण पनपे भूमंडलीय यथार्थ के विवरण उपन्यास के प्रारम्भ में ही मिल जाते हैं जो हमारे जीवन में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाते हैं। स्निग्धा सोचती है कि ''पापा ने मकान बदल लिया था, नौकरी बदल ली थी, शहर बदल लिया था और एक महिला मित्र को बगैर विवाह, साथ में रखने लगे थे। कह रखा था कि यह उनकी सेक्रेट्री है।''(ईंधन, पृ. 27) स्निग्धा जब रोहित की तरफ आकृष्ट होती है तो वह अन्य लड़कों के बारे में अपने विचार बताती है- ''मेरे अब तक देखे सारे लड़के

बाप की कमाई पर ऐश करने वाले थे। वे शिक्षा को बहुत ज्यादा गम्भीरता से नहीं लेते थे, इसलिए किसी भी दूसरी चीज को भी नहीं। क्रिकेट या लड़कियों को भी नहीं। वे अपने भविष्य के प्रति लगभग आश्वस्त थे। डैडी कुछ न कुछ कर ही देंगे। हर चीज उनके लिए एक 'पासिंग फेज' थी। कोल्डडिंक से संगीत तक और कपड़ों की डिजाइन्स से जीवन मूल्यों तक उनकी हर चीज थोड़े-थोड़े दिनों बाद बदलती रहती थी।''(ईंधन, पृ. 29) उपन्यास के इस अंश से स्पष्ट होता है कि आज हमारी जीवन शैली निरन्तर बदलती जा रही है। हमारे मूल्य बदल रहे हैं, आस्था बदल रही है, हमारी सोच भी स्थानीय न रहकर भूमंडलीय होती जा रही है। स्निग्धा से शादी करने के पश्चात् रोहित पर जीवन शैली बदलने का मानसिक दबाव बनाया जाता है। उसके संदर्भ में रोहित कहता है- ''मुझे सभ्य बनाया जा रहा था। पालतू बनाया जा रहा था। चार जनों के बीच पेश करने लायक बनाया जा रहा था। मुझे भद्र समाज के अनुकूल ढालने की कोशिश की जा रही थी। मुझे गगनचुम्बी सफलता की दिशा में प्रक्षेपित किया जा रहा था। यहाँ भद्रता-सभ्यता-सुरुचि के मानदण्डों पर कोई बहस नहीं थी। सफलता की कामना के औचित्य पर कोई विवाद नहीं था। जीवन के लक्ष्य के बारे में और जीने के आशय और अर्थ के बारे में कोई संदेह नहीं थे। सब कुछ पहले से स्पष्ट था। तय था। अब सिर्फ अमल करना था और इसके लिए जो आग्रह था वह इतना संशयहीन और सुपरिभाषित था कि उसे देखकर डर लगता था।''(ईंधन, पृ. 46) रोहित अपने ऊपर सफल होने के लिए जैसा दबाव भुगत रहा है उसी तरह आज प्रत्येक युवा की स्थिति भी वैसी ही है। ये स्थिति उदारीकरण व बाजारवाद के कारण बनी है जहाँ पहले से ही सब कुछ तय है। अब केवल अमल करना पर्याप्त है। हम परिवार में रहते हुए भी परिवार के लोगों से दूर होते जा रहे हैं, इसकी बानगी हमें मिलती है जब स्निग्धा के पिता को हार्ट अटैक होता है- ''डॉक्टर पूछ रहे थे पहले भी कभी ऐसा दौरा पड़ा है क्या? तुषार ने बताया। बताया नहीं। पूछा। मुझसे।- मेरे ख़याल से तो... नहीं पड़ा...कभी.... दरअसल... आयम नॉट स्योर! बताते-बताते मैं थोड़ा उलझन में पड़ गयी। क्या सोचेगा? बेटी को बाप की बीमारी के बारे में कुछ नहीं पता। यही सवाल डॉक्टर मुझसे पूछते और मैं न बता पाती तो? इच्छा हुई तुषार से कहूँ कि दरअसल मैं शुरू से ही बोर्डिंग हाउस में रही इसलिए जानती नहीं कि... बल्कि मैंने तो पापा का नंगा बदन भी आज पहली बार ही देखा है। यदि उनकी बीमारी के बारे में कोई बता सकता है तो उनकी वे महिला सेक्रेटरीज जो उनके साथ रहती थी। न कि मैं जो उनकी बेटी हूँ।''(ईंधन, पृ. 102) व्यक्ति इतना व्यस्त एवं आत्मकेन्द्रित पहले कभी नहीं हुआ जैसा आज हो गया है। आज बेटी को अपने पिता के बारे में भी पता नहीं कि वो कब बीमार हुए और उन्हें क्या बीमारी है? किससे एलर्जी है? यह भी पता नहीं कि उनका जन्मदिन कब आता है। स्निग्धा सोचती है कि ''पापा को कुछ हो गया? मैं तो कुछ भी नहीं जानती हूँ।...